पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

प्यासी धरती, प्यासे लोग

विजय कुमार शर्मा
C/o डॉ० संजय कुमार शर्मा
राजसं. क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहटी

कुछ वर्ष पहले की बात है जब मैं जवान था। घर में बैठे–बैठे अचानक एक विचार आया कि मैं किसी समाज–सेवा प्रणाली से जुड़ जाऊँ। अपने मित्रों से मन की बात कही तो एक ने मुझे इतवार को उसके साथ चलने को कहा। देखा कि आठ से दस लोग एक घर में मिले, कुछ हल्के से हास्य के साथ बठैक आरम्भ हुई। मेरा परिचय लोगों से कराया गया बाकी शेष परिचय मैंने स्वयं ही दे डाला।

लोगों के बीच बोलने का यह मेरा पहला मौका था, मैंने पाया कि वहां सभी लोग मेरी बातों को सुन रहे थे, लगा कि वे मुझ में रूचि ले रहे हैं। तभी एक आवाज घर के भीतर से आई, ''पानी नहीं है..... जल्दी से जाकर पानी भरकर लाओ तभी चाय नाश्ता मिलेगा''। तत्काल बने मित्र के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी, मानो उसके पैरों तले जमीन खिसक गई हो, वह मित्र जो हमें वहाँ ले गया था उसने स्थिति सम्भाली और कहा, ''चलो चाय–नाश्ता छोड़ते हैं अभी उसे घर पर काम करना है। ''हम सब वहां से चुपचाप उठे और बाहर निकल आये।

बाहर एक स्थान पर हम रूके, मैने मित्र से पूछा क्या बात है, अचानक हम सब वहाँ से उठ गये.....? मेरे मित्र ने मुझे जवाब दिया, यहाँ पानी की बहुत समस्या है, दिन में एक या दो घंटों के लिए ही पानी आता है, इसलिए हम, उस समय सभी कार्य छोड़कर जितना हो सके पानी भर लेते है''। ओह! मन में एक टीस–सी उठी और मैंने जैसे कि उनका दर्द समझ लिया हो, एक गहरी साँस लेकर खामोश हो गया–घर आ गया। पर जब एकांत में बैठकर सोचने लगा, बार–बार यही प्रश्न दिमाग में उठने लगा क्या पानी बिना जीवन–निर्वाह संभव है ? एक ही शब्द मन में चोट कर रहा था पानी ..... पानी।

मन में ख्याल आया कि पानी की समस्या को दूर करके मैं एक समाज के कल्याण का कार्य कर सकता हूँ, पर कैसे यह समझ में नहीं आ रहा था। पर कहते हैं ना कि ''जहां चाह वहीं राह''।

मैं एक संस्था से जुड़ा और अपने विचारों को प्रकट किया। सभी मेरी बात से सहमत हो गए और उन्होंने मुझे उस संस्था में उच्च पद दे दिया। अब अपने कार्य को पूरा करने के लिए पैसों की समस्या आई, पर मैंने हार नहीं मानी। मैंने अपनी संस्था से जुड़ी अन्य शाखाओं से पत्राचार बढ़ाया और धीरे–धीरे अपने विचारों को उन तक पहुँचाने लगा। तभी मैंने अपनी एक विदेशी संस्था को पत्र लिखा कि मैं कुछ ऐसे दूर–दराज के गाँवों में कुएँ खुदवाना चाहता हूँ, जहाँ वे पानी की समस्या से जूझ रहे हैं।

मेरे पत्र में लिखे मेरे विचारों से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने एक लाख का चेक भेजकर लिखा कि कार्य शुरू किया जाए, भविष्य में और भी आर्थिक सहायता का वचन दिया। अपनी संस्था के लोगों को जब मैने सूचित किया तब सभी के चेहरों पर खुशी की रौनक आ गई। अब शुरू हुआ हमारा अभियान। हमने छोटी–छोटी टोली बनाई, यह पता लगाने, कि किस गाँव में पानी की अधिक समस्या है ?

मैं जिस टोली में था, जब हम एक गाँव में पहुँचे वहां हमने एक कुआँ देखा जिसमें ढेरों रस्सियाँ, बाल्टियों से बंधी उसमें लटक रही थी, लेकिन पानी एक भी बाल्टी में नहीं था, हम सब वहाँ रूक गए, वहीं कुएँ की तरफ टकटकी लगाए एक बूढ़ी औरत को देखकर पूछा यह सब क्या है ? उसने जवाब दिया, साहब इस गाँव में करीब बीस परिवार हैं, लेकिन पानी नहीं है, हम लोग अपनी बाल्टी लटका देते हैं, आठ–नौ घंटे में आधी बाल्टी पानी भर जाती है जिससे हमारे घरों में खाना बनता है। बूढ़ी माँ की बातों को सुनकर हमारे आँखों में पानी आ गया। बड़ी दयनीय दशा थी। हमनें विचार किया और सभी ने अपनी सहमति दे दी कि यहाँ कुआँ खोदना अत्यंत आवश्यक है।

हमारी टोली को देखकर गाँव के लोग एकत्र होने लगे जब पता चला कि हमारा उद्देश्य क्या है, तब वे बहुत खुश हुए, बात फैलते–फैलते दूसरे गाँव भी पहुँची वहां से भी लोग आने लगे। पहले तो उन्हें लगा कि हम किसी पार्टी के लोग हैं और वोट माँगने के लिए झूठे आश्वासन दे रहे हैं, पर जब हमने समझाया कि हम वोट माँगने नहीं आए हैं, बल्कि समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं, तब गाँव के कुछ युवक सामने आए और उन्होंने कहा, साहब आप काम शुरू करवाइए हम सब इस काम में श्रम–दान करेंगे। अब तो काम अत्यन्त सरल हो गया। कुछ दिनों बाद कुछ मजदूरों के साथ हम वहां पहुंचे, देखा गाँव वाले जैसे हमारा ही इंतजार कर रहे थे। कार्य शुरू हुआ पर दस फुट गहरा खोदने पर एक बड़ी चट्टान दिखी। तब गाँव वालों ने ही डायनामाइट लगा कर दिन में पाँच, छः विस्फोट करके उस चट्टान को तोड़ दिया, चट्टान के टूटते ही फव्वारे जैसी पानी की धार निकली, लोग खुशी से उछलने लगे साफ और मीठा पानी जैसे उनके लिए अमृत हो। अब वे दुगनी मेहनत से कुएँ की खुदाई में जुट गए। एक सप्ताह में करीब तीस फुट कुआँ खोद दिया गया।

कुएँ के उद्घाटन का समय निर्धारित कर अपनी संस्था के अन्य सदस्यों को भी निमंत्रित किया गया।

गाँव वालों की आँखों में खुशी के भाव देखकर हम सब भी खुश थे। तभी एक बुर्जुग सामने आए और बोले, आप लोगों का बहुत–बहुत धन्यवाद। इतने सालों से हम लोग आश्वासन देते थे, पर कुछ करते नहीं थे, परन्तु आपने तो बिना आश्वासन दिए, इतना बड़ा कार्य कर दिया। हम लोगों ने कहा यह सब आप लोगों के श्रमदान का ही फल है, हमने तो केवल प्रेरणा दी है।

गाँव वाले कुएँ से पानी निकाल कर इस तरह मटकों में भर रहे थे कि पानी बाहर छलक कर बर्बाद न हो, क्योंकि उन्हें पानी की कीमत पता थी।

आज भी जब दूरदर्शन पर यह देखने को मिलता है, कि कई गाँवों में लोग पानी के लिए मीलों पैदल चलते हैं, तब मुझे अपनी संस्था पर गर्व होता है, काश! भारत के अन्य क्षेत्रों में भी लोग हमारे कार्यों से प्ररेणा लें तो भारत में पानी की समस्या तो दूर होगी ही, ऐसे कार्यों से जो हमें आत्मसुख प्राप्त होगा वह अन्य सुखों की तुलना में कई अधिक होगा।

––––– (एक संस्मरण) –––––